संगम काल (100-300AD): राजनीति, प्रशासन, अर्थव्यवस्था, समाज एवं धर्म

भाग:-8

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

SNSRKS, कॉलेज सहरसा

सामाजिक स्थिति (Social Life)

संगम काल से पूर्व का समाज मूलतया जनजातीय था परंतु कृषि के कारण धीरे-धीरे इसमें परिवर्तन के तत्व दिखने लगे| इसकी दूसरी विशेषता उत्तर दक्षिण का सामाजिक समन्वय था| इसी समय उत्तर से अनेक धर्म प्रचारक जैसे ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन आदि आकर दक्षिण में बस गए| इससे मिश्रित सामाजिक व्यवस्था की स्थापना हुई|

उत्तर भारतीय समाज के अनुसार यहां पर संयुक्त परिवार की प्रथा थी, जिसमें माता-पिता, भाई-बहन, पुत्र और पुत्रवधूओं का स्थान था| यहां वैदिक वर्ण व्यवस्था की तरह विभाजन मिलता है, जिसका उल्लेख पुरुनानरू में मिलता है| ये वर्ण अरसर (शासक), अंडनर (ब्राह्मण) वेनिगर (वनिक) तथा वेलाल (किसान) थे| हालाँकि यहां पर कुछ भिन्नता भी मिलती है| क्योंकि क्षत्रिय तथा वैश्य नियमित वर्ण नहीं थे| ब्राह्मण सबसे महत्वपूर्ण वर्ग था| इनकी समाज तथा राज दरबार में पर्याप्त प्रतिष्ठा थी| दक्षिण भारत के ब्राह्मण मांसाहारी थे तथा इसे कुप्रवृत्ति के रूप में नहीं देखा जाता था|

वेल्लार का कृषि की अधिकांश भूमि पर नियंत्रण होता था| इन्हें कृषक वर्ग में रखा गया है| बेल्लार कृषि के साथ-साथ चोल, चेर व पांड्य राज्यों में सैनिक और असैनिक दोनों प्रकार के कार्य करते थे| वेल्लार दो भागों में विभक्त थे| जमींदार, भूमिहीन तथा खेतिहर| चोल राज्य में उनकी उपाधि 'वेल' और आरशु तथा पांड्य राज्य में कविदी थी| इन्हें शासको की तरह राजनीतिक अधिकार प्राप्त था| खेत मजदूर का काम सबसे निचले वर्ग के लोग कड़ैसियर करते थे, जिनकी हैसियत गुलामों के जैसी थी| संगम काल में सामाजिक विषमता भी मिलती है| पुलेयर लोग रस्सी की चारपाई बनाते थे| एनियर वाधकों की जाति थी|

संगम काल में स्त्रियों को सम्मान प्राप्त था| उच्च वर्ग की स्त्रियां कला की शिक्षा प्राप्त करती थी| तोल्कपियम में विवाह के संस्कार का वर्णन है| यहां पर आठ प्रकार के विवाह प्रचलित है| गंधर्व विवाह को कलवु कहा कहा जाता था, माता-पिता के सहमति से होने वाले विवाह को करपु कहा जाता था| समाज में सती प्रथा विद्यमान थी, जिसका प्रोत्साहन कन्नगी की पूजा से हुआ| मछुआरे व तटीय लोग वरुण की

पूजा करते थे| किसान लोग इंद्र की पूजा करते थे| पुहार के वार्षिक उत्सव में इंद्र की विशेष प्रकार की पूजा होती थी| मरियम्मा (परशुराम की माता) चेचक से संबंधित शीतल माता थी| येलम्मा सीमा की देवी थी|